॥ श्री गणेशाय नमः॥

बृहस्पति (गुरु)

बृहस्पति का स्वरूप :- बृहस्पति अत्यंत सुन्दर हैं। बृहस्पति पीत वर्ण के हैं, पीत वस्त्र धारण करते हैं, कमल के आसन पर विराजमान हैं, इनका वाहन स्वर्ण निर्मित रथ है, इनके रथ में पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं, इनके चार हाथों में दंड, रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरमुद्रा सुशोभित है, देवगुरु बृहस्पति के सिर पर स्वर्ण मुकुट तथा गले में सुन्दर माला है, इनका आयुध स्वर्णनिर्मित दंड है, इनका आवास स्वर्णनिर्मित है।

बृहस्पति महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं के पुरोहित हैं। बृहस्पति के अधिदेवता इन्द्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं। बृस्पति की पहली पत्नि शुभा से सात कन्याएँ उत्पन्न हुईं- भानुमती, राका, अर्चिष्मती, महासती, महष्मती, सिनीवाली, और हविष्मती। इनकी दूसरी पत्नि से सात पुत्र तथा एक कन्या उत्पन्न हुई। तीसरी पत्नि से भारद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। बृहस्पति ने भगवान् शंकर की कठोर तपस्या की, उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया।

प्रातःबली, दीघ्राकार, विप्र-वर्ण, द्विपद स्वामी, पुरुष, सौम्यस्वभाव, पीतवर्ण, समप्रकृति, मधुर-स्वाद, समदृष्टि, उत्तर-मुख, वृद्ध, सर्वशास्त्र विशारद, व्याकरण विद्या, देवस्थान।

बृहस्पति ग्रह :- धनु तथा मीन राशि का स्वामी है। कर्क के ५ अंश पर उच्च तथा मकर के ५ अंश पर नीच होता है। मूलत्रिकोण राशि धनु है। महादशा १६ वर्ष की होती है। १६ वर्ष की आयु में भाग्योदय कारक होता है।

बृहस्पति ग्रह :- गोचर में जब जन्म राशि से २, ५, ७, ९, और ११ वें स्थान में गुरु शुभफलप्रद होते हैं। १, ३, ४, ६, ८, १० और १२ वें स्थान में अशुभ होते हैं।

बृहस्पतिवार व्रत विधि :- बृहस्पतिवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद मन्त्र का जप करे एवं केले के पेड़ की पूजा करे और सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर केशर डाल कर बनाई गई खीर का एक समय भोजन करे। शुक्रवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद पारण करे।

बृहस्पति की अनुकूलता के लिए शास्त्र श्रवण करे।

दान पदार्थ :- पीत-धान्य, पीत-वस्त्र, सुवर्ण, घृत, पीप-पुष्प, केला, पुखराज, अश्व, हल्दी, पुस्तक, मधु, शक्कर, भूमि, छाता, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- पुखराज।

धारणार्थ औषधि :- भारंगी (वभनेठी)

देवता :- बृहस्पति ग्रह के अधिदेवता इन्द्र तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

ध्यान :- पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरुः प्रशान्त।
तथाक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डं च बिभ्रद्वरदोऽस्तुमह्यं॥
(देवानां गुरुः तद्वत् पीतवर्णः चतुर्भुजः। दण्डी च वरदः कार्य साक्षसूत्रकमण्डलुः॥)

२७ गुरु यन्त्रम्

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ बृं बृहस्पतये नमः। जपसंख्या १९,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ ह्रँ ह्रीँ ह्रौँ सः गुरवे नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ह्रीँ क्लीँ हूँ बृहस्पतये नमः।

बृहस्पति गायत्री :- ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मंत्र :- देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग १:- ॐ बृहस्पतये इतिमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता
बृहस्पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास २:- ॐ गृत्समदऋषये नमः शिरसि।
ॐ त्रिष्टुप् छन्दसे नमः मुखे।
ॐ बृहस्पतिर्देवतायै नमः हृदये।
ॐ बृहस्पति प्रीत्यर्थे जपे विनियोग नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास ३:- ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्य्यो अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ अर्हाद्युमदिति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ विभति क्रतुमदिति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ जनेषु अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ द्रविणंधेहिचित्रमिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास ४:- ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्यो हृदयाय नमः।
ॐ अर्हाद्युमदिति शिरसे स्वाहा।
ॐ विभाति क्रतुमदिति शिखायै वषट्।
ॐ जनेषु कवचाय हुम्।
ॐ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्प्रजाततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ द्रविणंधेहिचित्रमित्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युम द्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद् दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये नमः॥

बृहस्पतिस्तोत्रम्

विनियोग- अस्य श्री बृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः अनुष्टूप्छन्दः बृहस्पतिदेवता बृहस्पतिप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

गुरुर्बृहस्पतिर्जीवः सुराचार्यो विदांवरः। वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीताम्बरो युवा॥१॥
सुधादृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीडापहारकः। दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः॥२॥
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः। तारापतिश्चांगिरसो वेदवैद्यपितामहः॥३॥
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्। अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान स भवेन्नरः॥४॥
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति। यः पूजयेद्गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः॥५॥
पुष्पदीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्। ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडाशान्तिर्भवेद्ध्रुवः॥६॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणोक्तं बृहस्पतिस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

बृहस्पतिकवचस्तोत्रम्

अस्य श्रीबृहस्पतिकवचस्तोत्रम् ईश्वरऋषिः अनुष्टुप्छन्दः गुरुर्देवता गं बीजं श्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं गुरुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

अभीष्टफलदं देवं सर्वज्ञं सुरपूजितम्। अक्षमालाधरं शान्तं प्रणमामि बृहस्पतिम्॥१॥
बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटं पातु मे गुरुः। कर्णौ सुरगुरुः पातु नेत्रे नेऽभीष्टदायकः॥२॥
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः। मुखं मे पातु सर्वज्ञो कण्ठं मे देवतगुरुः॥३॥
भुजावांगिरसः पातु करौ पातु शुभप्रदः। स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षिं मे शुभलक्षणः॥४॥
नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः। कटिं पातु जगद्वंद्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः॥५॥
जानुजङ्घे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा। अन्यानि यानि चाङ्गानि रक्षन्मे सर्वतोगुरु॥६॥
इत्येतत्कवचं दिव्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः। सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्॥७॥

॥ इति श्रीब्रह्मयामलोक्तं बृहस्पतिकवचस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**-- विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

४ **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com